ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

परिवार में आई खुशहाली
(पृष्ठ – 02)

सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिला आगे बढ़ने का सहारा
(पृष्ठ – 03)

संघर्ष से स्वावलंबन
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – मार्च 2024 ।। अंक – 32

सतत् जीविकोपार्जन योजना से सामाजिक परिवर्तन

बिहार में अत्यंत निर्धन परिवारों को जीविकोपार्जन के स्थायी साधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से अगस्त 2018 में सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत की गई थी। इस योजना का मुख्य उद्देश्य शराबबंदी से प्रभावित परिवारों के साथ–साथ समाज के अत्यंत निर्धन परिवारों को जीविकोपार्जन के साधन उपलब्ध कराते हुए उन्हें समाज की मुख्य धारा में शामिल करना है। खास बात यह है कि इस योजना के तहत लाभार्थी परिवारों को जीविकोपार्जन गतिविधि के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनाने हेतु 'ग्रेजुएशन एप्रोच' अर्थात 'क्रमिक वृद्धि' दृष्टिकोण की रणनीति अपनाई गई है। परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में अत्यंत निर्धन परिवार अब अपनी जीविकोपार्जन गतिविधियों को सफलतापूर्वक संचालित करते हुए स्वावलंबन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इससे समाज में उनकी खास पहचान बनी है एवं उनका मान–सम्मान बढ़ा है। इस योजना की बदौलत समाज के सबसे निर्धन परिवारों के जीवन में आए इस बदलाव की वजह से सामाजिक परिवर्तन भी देखने को मिल रहा है।

परिवारों की पहचान – सतत् जीविकोपार्जन योजना के लिए योग्य परिवारों की पहचान हेतु ग्राम संगठन स्तर पर 5 दिवसीय विशेष अभियान चलाया जाता है। इसके तहत सामुदायिक संसाधन सेवी क्षेत्र भ्रमण करके लक्षित परिवारों को चिन्हित करते हैं। गाँव का सामाजिक मानचित्रण करते हुए ऐसे अत्यंत निर्धन परिवारों की सूची तैयार की जाती है, जिन्हें योजना से जोड़ा जा सके। इस कार्य में समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित की जाती है। चयनित सूची को संबंधित ग्राम संगठन द्वारा अनुसंशित की जाती है।

क्षमतावर्द्धन– योजना के तहत योग्य परिवारों का चयन किये जाने के उपरांत उनका क्षमतावर्द्धन किया जाता है। इसके लिए उन्हें विश्वास निर्माण एवं उद्यमिता विकास का प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही विभिन्न विभागों के साथ अभिसरण हेतु सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में उन्हें जानकारी दी जाती है। इसके अलावा लक्षित परिवारों को जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़ाव, इसके क्रियाकलापों एवं विशेषताओं के बारे में भी प्रशिक्षित किया जाता है।

जीविकोपार्जन संवर्धन– सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत अत्यंत निर्धन परिवारों को जीविकोपार्जन हेतु बहु–वैकल्पिक अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाती है। योजना के तहत ग्राम संगठन के माध्यम से वित्तीय सहायता प्राप्त कर इन परिवारों के द्वारा किराना दुकान, मनिहारी दुकान, फल–सब्जी या अंडे की दुकान, बकरी पालन, गाय पालन और खेती जैसी जीविकोपार्जन गतिवधियों संचालित की जा रही है। परिवारों द्वारा चयनित उद्यमों के सफल संचालन हेतु सतत् जीविकोपार्जन योजना के मास्टर संसाधन सेवी द्वारा नियमित रूप से मदद की जाती है। ऐसे परिवारों को गरीबी से उबारने के लिए क्रमिक वृद्धि दृष्टिकोण की रणनीति के तहत काम किया जाता है।

सरकारी योजनाओं से जुड़ाव– योजना के तहत चिह्नित परिवारों को सरकार की विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का लाभ पहुँचाया जा रहा है। इसमें मुख्यत: सामाजिक सुरक्षा योजनाएं, प्रधानमंत्री आवास योजना, मनरेगा, राष्ट्रीय खाद्यान्न सुरक्षा योजना एवं बिहार महादलित विकास मिशन के अंतर्गत क्रियान्वित की जा रही योजनाएँ शामिल हैं। लोक कल्याणकारी कार्यक्रमों में मुख्य रूप से खाद्यान्न सुरक्षा, बीमा, बैंक में बचत खाता, नल–जल योजना, शौचालय निर्माण, बच्चों का विद्यालय में नामांकन एवं उपस्थिति, कौशल विकास आदि योजनाओं से जुड़ाव किया जा रहा है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है। ये महिलाएँ आज समाज में वह अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी हैं। पहले दो वक्त के भोजन के लिए भी उन्हें मोहताज होना पड़ता था, लेकिन अब इस योजना से जुड़कर वे आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बन रही हैं। अब इन महिलाओं के आत्मविश्वास में बृद्धि हुई है और समाज की मुख्यधारा में शामिल हो रही है।

परिवार में आई खुशहाली

पचिया देवी सुपौल जिला के सरायगढ़–भपटियाही प्रखंड की रहने वाली है। वह गौतम जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य है। यह समूह आस्था जीविका महिला संकुल संघ और सरस्वती जीविका महिला ग्राम संगठन से जुड़ा है। पचिया देवी ने अपने जीवन में काफी दुख झेली हैं। वह बताती हैं, 'करीब 15 साल पहले मेरे पति ने मुझे और मेरे 3 बच्चों को छोड़कर दूसरी शादी कर लिए थे। इससे मेरे ऊपर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा था। क्योंकि मेरे घर में पति के अलावा कमाने वाला कोई नहीं था। मेरे पास कोई जमा पूंजी भी नहीं थी, जिससे कि मैं अपने बच्चों का परवरिश कर सकती थी।'

वह बताती हैं कि उनके पति द्वारा अक्सर उनके साथ पार–पीट की जाती थी। जिससे उनके पैर और छाती की हड्डी टूट गई थी। इससे उन्हें मजदूरी करने में भी बहुत कठिनाई होती थी। सिर्फ मजदूरी से परिवार का पालन–पोषण करना काफी मुश्किल भरा था। इसके बाद पचिया देवी ने स्थानीय हाट में सब्जी बेचने का काम शुरू किया। सब्जियों को हाट तक पहुंचाने में उन्हें अपने बच्चों की मदद लेनी पड़ती थी।

उनकी दयनीय स्थिति को देखते हुए सरस्वती जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत किया गया। इस योजना के तहत उन्हें अभी तक कुल 60 हजार रुपये का सहयोग मिल चुका है। योजना के तहत प्राप्त वित्तीय सहायता से उन्होंने घर पर ही किराना दुकान चला रही है।

वह बताती हैं, 'जीविका की मदद से मैं इस दुकान को अच्छी तरह चला रही हूँ। अब इस दुकान से मुझे रोजाना अच्छी आमदनी हो जाती है। इससे मैं अपने परिवार की जरूरतों की पूर्ति करने में सक्षम हुई हूँ।'

इस दुकान से होने वाली कमाई से इन्होंने दुकान की परिसंपत्ति बढ़ाकर करीब 1.5 लाख रुपये कर ली है। दुकान की आय में से वह नियमित रूप से बचत भी करती है। उनके पास बैंक बचत खाता भी है। उन्होंने अपना बीमा करवाया है एवं सरकार की तमाम योजनाओं का लाभ भी उठा रही है।

कौशल्या दीदी के जीवन में आया बदलाव

अररिया जिले के भरगामा प्रखंड की रहने वाली कौशल्या देवी का परिवार पहले संकटों से गुजर रहा था। लेकिन सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर उनका परिवार अब खुशहाल एवं आत्मनिर्भर बन गया है। कौशल्या देवी के परिवार में पति–पत्नी के अलावा 4 बेटा और एक बेटी है। परिवार बड़ा होने के कारण पारिवारिक खर्च ज्यादा थी। लेकिन आमदनी का जरिया सिर्फ मजदूरी था। ऐसे में परिवार में हमेशा आर्थिक तंगी बनी रहती थी।

दीदी की दयनीय स्थिति को देखते हुए ग्राम संगठन द्वारा इनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत किया गया। इसके तहत फरवरी 2020 में कौशल्या देवी को किराना व्यवसाय शुरू करने के लिए विशेष निवेश निधि के रूप में 10 हजार रुपये एवं जीविकोपार्जन निवेश निधि के रूप में 50 हजार रुपये की परिसंपति प्रदान किया गया है। इस राशि से इन्होंने अपना किराना व्यवसाय शुरू किया। इस व्यवसाय को बेहतर ढंग से चलाने के लिए दीदी को योजना के तहत कार्यरत मास्टर संसाधन सेवी का भरपूर साथ मिला। साथ ही दुकान चलाने में उनके पूरे परिवार ने भी काफी मेहनत की। इसकी बदौलत उनका व्यवसाय ठीक से चल रहा है।

दुकान से अब नियमित आय होने लगी है। इससे वह अपने परिवार की जरूरतों की पूर्ति करने में सक्षम हुई है। इसके अलावा अब वह बैंक खाते में नियमित रूप से बचत भी करती है। इनके बचत खाते में अबतक 5000 रुपये जमा हैं। अपनी बचत की राशि एवं योजना के तहत द्वितीय किश्त के रूप में मिले पैसे से इन्होंने किराना दुकान के अलावा बकरी पालन और गाय पालन भी शुरू की है। वर्तमान में इनकी कुल परिसंपत्ति बढ़कर 1 लाख 78 हजार रुपये से ज्यादा हो गयी है। उनकी मासिक आमदनी 10 हजार रुपये से अधिक है। इस प्रकार सतत् जीविकोपार्जन योजन की बदौलत इनके परिवार में खुशहाली आई है।

किरण दीदी के जीवन में दिखाई दी उम्मीद की किरण

किरण देवी पटना जिला के धनरूया प्रखंड स्थित सहरु गाँव की रहने वाली है। इनका परिवार परंपरागत रूप से ताड़ी के उत्पादन एवं विक्री से जुड़ा था। ताड़ के पेड़ से ताड़ी उतारने के क्रम में एक दिन पेड़ से गिर जाने की वजह से इनके पति की अचानक मौत हो गई थी। पति की असमय मृत्यु हो जाने से किरण देवी के जीवन में संकट के बादल छा गए।

सतत् जीविकोपार्जन योजना की वजह से किरण देवी को अपने जीवन में उम्मीद की किरण दिखाई दी। इस योजना ने उन्हें आजीविका का सहारा दिया है। किरण देवी की दयनीय स्थिति को देखते हुए उन्हें ग्राम संगठन की दीदियों द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया था। उन्हें विशेष निवेश निधि, जीविकोपार्जन निवेश निधि और जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि के तहत कुल कुल 37,000 रुपये की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई। योजना के तहत प्राप्त वित्तीय सहायता से इन्होंने सब्जी बेचने का व्यवसाय शुरू किया। किरण दीदी को शुरुआत में काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। लेकिन उन्होंने इस चुनौती का डट कर सामना किया। धीरे–धीरे उनका व्यवसाय आगे बढ़ने लगा। सतत् जीविकोपार्जन योजना के मास्टर संसाधन सेवी के सहयोग से इन्होंने अपने व्यवसाय का विस्तार किया।

अब उनके पास सब्जी एवं फल की स्थाई दुकान है। इसके अलावा उन्होंने खेती हेतु जमीन भी खरीद लिया है। इस खेत में वह सब्जियों की पैदावार करती है और दुकान में बेचती है। दुकान में सब्जी एवं फल खरीदने वाले ग्राहकों की भीड़ लगी रहती है। इससे उनकी आय में अच्छी–खासी वृद्धि हुई है। दुकान से हो रही अच्छी और नियमित आय से उनके परिवार को वित्तीय स्थिरता मिली है। किरण दीदी की कहानी परिवर्तनकारी प्रभाव को दर्शाती है, जो निराशा को आशा में और कठिनाई को सफलता में बदल देती है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिला आगे बढ़ने का सहारा

गया के मानपुर प्रखंड के सनौत पंचायत के बरेव गांव की रहने वाली लालती देवी ने अपने जीवन में गरीबी के कारण अनेक कठिनाईयों का सामना किया है। पति की असमय मृत्यु से उनकी पारिवारिक स्थिति ख़राब हो गई थी। परिवार का भरण–पोषण चलना कठिन हो गया था। खेती करने के लिए जमीन नहीं थी। आय का कोई स्थायी साधन नहीं था। किसी तरह मजदूरी करके गुजारा करना पड़ता था।

ऐसे में सतत् जीविकोपार्जन योजना से उनके जीवन में उम्मीद की किरण बनकर आयी। वर्ष 2020 में इस योजना के तहत उन्हें जीविका ग्राम संगठन के माध्यम से किराना दुकान खोलने के लिए वित्तीय सहायता मिली।

लालती बताती हैं, 'मुझे शुरुआत में किराना दुकान की संरचना निर्माण हेतु पूँजी एवं दुकान संचालन हेतु ग्राम संगठन द्वारा किराना सामान खरीद कर दिया गया। इसके बाद मैं किराना दुकान चलाने लगी। सतत् जीविकोपार्जन योजना ने मुझे आगे बढ़ाने के लिए सहारा दिया है।' लालती देवी अब सफलतापूर्वक अपने किराना दुकान का संचालन कर रही है और क्रमिक विकास करते हुए स्वावलंबन की ओर अग्रसर हुई है।

इनकी पारिवारिक स्थिति में काफी सुधार आया है। जहाँ पहले भोजन के लिए भी संघर्ष था, आज वह अपने परिवार की सभी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हुई है। वह अपने बच्चों को पढ़ा भी रही है। इन्हें किराना दुकान से प्रति माह लगभग 6000 रुपये की आय होती है। इसके अतिरिक्त इन्होंने 4 बकरी और एक भैंस भी पाल रखी है जिससे परिवार भरण–पोषण ठीक से हो रहा है।

इन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे– राशन कार्ड, आवास, स्वच्छ पेय जल, शौचालय, विधवा पेंशन आदि का लाभ भी मिला है। कई बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए इन्हें मिशन स्वावलंबन के तहत प्रमाण पत्र दिया गया है। वह अपने वर्तमान रोजगार से काफी खुश है और इसे आगे बढ़ाना चाहती है।

संघर्ष से स्वावलंबन

मुन्नी दीदी की कहानी उन सभी महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं, जिन्होंने परिस्थितियों के आगे घुटने टेक दिए हैं। दिव्यांग मुन्नी देवी को अपने जीवन में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। जीविका ने इन्हें कठिन वक्त में सहारा दिया एवं सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़कर स्वरोजगार उपलब्ध कराया है। इसकी बदौलात आज वह आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनकर अपने पैरों पर खड़ी हो गई है।

मुन्नी दीदी खगड़िया जिला के अलौली प्रखंड ग्राम स्थित अम्बा इचारुआ की निवासी है। इनकी शादी संजय सिंह से हुई थी। लेकिन शादी के कुछ ही दिनों बाद इनके पति ने उन्हें छोड़ दिया था। इससे मुन्नी एकदम अंदर से टूट गई थी। वह अकेली हो गई थी। उनके पास जीविकोपार्जन का कोई साधन नहीं था। यहाँ तक कि उनके पास खाने के लिए भी पैसे नहीं थे। ऐसे में वह किसी तरह मजदूरी करके गुजर–बसर कर रही थी। मुन्नी की दयनीय स्थिति को देखते हुए वर्ष 2018 में ग्राम संगठन द्वारा उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया। तदुपरांत इनका क्षमतावर्द्धन किया गया। योजना के तहत प्राप्त हुई वित्तीय सहायता से इन्होंने मनिहारी दुकान खोला। इसके बाद मुन्नी दीदी ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

सतत् जीविकोपार्जन योजना की मदद से मुन्नी दीदी ने खुद को स्वावलंबी बनाया है। व्यवसाय के सफलतापूर्वक संचालन हेतु उन्हें प्रशिक्षित किया गया है। साथ ही उन्हें मास्टर संसाधन सेवी के द्वारा निरंतर मदद की गयी जिससे उनका हौसला बढ़ा और उनके अंदर आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। अब वह अपने दम पर मनिहारी दुकान चला रही है। इस व्यवसाय से वह नियमित रूप से आमदनी अर्जित कर रही है। मुन्नी दीदी ने वर्ष 2019 में 27,000 रुपये से इस व्यवसाय की शुरुआत की थी। इसके बाद वर्ष 2020 में दुकान की परिसंपत्ति बढ़कर 50,000 रुपये हो गयी। वहीं वर्ष 2021 में इनकी दुकान की परिसंपत्ति बढ़कर 90,000 रुपये हो गई। वर्ष 2022–23 में इन्हें योजना के तहत जीविकोपार्जन निवेश निधि की दूसरी किश्त के रूप में 27,000 रुपये प्राप्त हुए। इस राशि से इन्होंने दुकान में पूंजी निवेश किया, जिससे दुकान की परिसंपत्ति बढ़कर 1,20,000 रुपये हो गयी। मुन्नी दीदी ने दुकान की आमदनी से एक सिलाई मशीन भी खरीदी है, जिससे उनकी आमदनी में बढ़ोतरी हो रही है। इस प्रकार मुन्नी दीदी द्वारा संचालित दुकान की परिसंपत्ति एवं इसकी आमदनी में हो रही उत्तरोत्तर वृद्धि उनके स्वावलंबन का प्रतीक है।

मुन्नी दीदी की कहानी हमें यह बताती है कि अत्यंत निर्धन परिवारों की उन्नति के लिए सक्षम योजनाओं का सही उपयोग कैसे किया जा सकता है। इस योजना की बदौलत मुन्नी ने अपने जीवन को नई दिशा दी है और अपने सपनों को साकार किया है। सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर मुन्नी देवी के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है। दिव्यांग होने के बावजूद मुन्नी दीदी अपने पैरों पर खड़ी है एवं आत्मनिर्भर बनकर मिसाल कायम की है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार